सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह स्वमान -मैं श्रेष्ठ स्वमानधारी हूँ।

जरा अपने श्रेष्ठ स्वमान का देखें, आप विश्व की आत्माओं के पूर्वज भी हो और पूज्य भी हो। सारी सृष्टि के जड़ में आप आधारमूर्त हो, परमात्म रचयिता की पहली-पहली श्रेष्ठ रचना हो। दुनिया के लिए जो असम्भव बातें हैं वह आपके लिए सहज और सम्भव हो गई हैं क्योंकि आप सर्वशक्तिवान परमात्म बाप के डायरेक्ट बच्चे हो।

योगाभ्यास -रूहानी ड्रिल करें -अभी-अभी ब्राह्मण, फिर फरिश्ता और फिर अशरीरी....सारे दिन में चलते-फिरते, कामकाज करते हुए भी एक मिनट, दो मिनट निकाल यह अभ्यास करो। चेक करो जो संकल्प किया वही स्वरूप अनुभव हुआ..? बाबा ही हमारा संसार है। अमृतवेला यह स्लोगन याद करना तो सारी आकर्षण, सारा दिल का प्यार एक बाबा में जायेगा। नयनों से बाबा दिखाई देगा, मुख से बाबा निकलेगा, चेहरे में सदा बाप का नशा दिखाई देगा और संबंध-सम्पर्क में सदा ही बाप से सर्व सम्बन्ध जुटे रहेंगे।

धारणा -साक्षी दृष्टा -साक्षी दृष्टा की सीट पर सेट रहने वाले कभी भी अपसेट हो नहीं सकते। जब साक्षी दृष्टा की सीट से नीचे उतरते हो तो अपसेट होते हो। तीन चीजें ही परेशान करती हैं -चंचल मन, भटकती बुद्धि और पुराने संस्कार। जब पुराने संस्कार को मेरा-मेरा कहा तो मेरे ने जगह बना ली है...इसलिए आप ब्राह्मण मेरा-मेरा कह नहीं सकते। यह पास्ट जीवन के द्वापर मध्य के, शुद्र जीवन के संस्कार हैं। आप श्रेष्ठ आत्माओं के पुराने ते पुराने संस्कार अनादि और आदि संस्कार हैं। अब इन संस्कारों को अपने अनादि और आदि स्वरूप की स्मृति से इमर्ज करो।

चिन्तन -हमारे अनादि और आदि संस्कार कौन-कौन से हैं? हमारे अनादि और आदि संस्कार सदा इमर्ज रूप में कैसे रहें..? अनादि और आदि संस्कार वाली आत्माओं की क्या-क्या निशानियाँ होंगी?

साधकों के प्रति - प्रिय साधकों ! बापदादा ने होमवर्क दिया था..याद है? दुआ दो और दुआ लो, जब हम दुआ देते हैं तो उसमें दुआ लेना स्वत: हो जाता है। जिन्होने यह होमवर्क पूरा किया हैं वे चाहे आए हैं या नहीं, लेकिन वे बापदादा के सम्मुख हैं उन्होने अपने मस्तक पर बाप द्वारा विजय का तिलक लगा लिया...अब और अपनी नेचुरल नेचर बनाते हुए आगे भी करते, कराते रहना। और जिन्होने थोड़ा बहुत किया है अथवा नहीं भी किया तो वह सभी अपने को सदा मैं पूज्य आत्मा हूँ बाप की श्रीमत पर चलने वाली विशेष आत्मा हूँ-इस स्मृति को बार-बार स्वरूप में लाना। जब लक्ष्य है सोलह कला सम्पन्न बनने का..तो सोलह कला अर्थात परम पूज्य। परम पूज्य आत्माओं का कर्त्तव्य ही है दुआ देना...तो यह संस्कार चलते-फिरते सहज और सदा के लिए बनाओ।

द्वितीय सप्ताह स्वमान -मैं स्वराज्य अधिकारी मा.सर्वशक्तिवान हूँ

वर्तमान समय बापदादा हम बच्चों को भृकुटी के तख्तनशीन, स्वराज्य अधिकारी, मा.सर्वशक्तिवान के रूप में सदा देखना चाहते हैं। मा.सर्वशक्तिवान अर्थात् -सर्वशक्तियों और सर्व कर्मेन्द्रियों के अधिकारी और अन्य आत्माओं को भी अधिकारी बनाने वाले।

योगाभ्यास - मैं मा.सर्वशक्तिवान, सर्वशक्तिवान बाप से कम्बाइण्ड हूँ, उससे निकलती हुई सर्वशक्तियों की रंग-बिरंगी किरणें मुझे आत्मा को आलोकित कर रही हैं और फिर मुझसे चारों ओर फैलती जा रही हैं।

रूहानी एक्सरसाईज - मन को शक्तिशाली व व्यर्थ संकल्पों से मुक्त करने के लिए हर घण्टे में कम से कम पाँच मिनट, पाँच स्वरूपों का अभ्यास करें। स्वराज्य अधिकारी बन कर्मेन्द्रियों का राज्य दरबार लगाएं।

धारणा -व्यर्थ से पूरी तरह मुक्त रहना -व्यर्थ से पूरी तरह मुक्त रहने के लिए स्वयं से दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि न व्यर्थ देखना है, न व्यर्थ बोलना है, न व्यर्थ सुनना है, न व्यर्थ समय गंवाना है और न ही व्यर्थ सोचना है।

सारे दिन में स्थूल कर्म करने के साथ-साथ मनसा को भी बिजी रखने का टाइम टेबल बनाएं। स्व-दर्शन, स्व-चिन्तन और स्व-चेकिंग करनी है। मुरली की कुछ प्वाइंट्स नोट कर उसे बार-बार कर्मक्षेत्र में स्मृति में लाना है। ताकि उसे जीवन में प्रेक्टिकल किया जा सके।

दया बनाम...

पेज 2 का शेष...

भाव होना चाहिये कि वह पाप कर्म न करे और उसका कल्याण हो। जिसके हाथ में कुछ अधिकार हैं, जो ऊँची कुर्सी पर बैठा है या सत्ता का डण्डा लिये हुए है, वह अभिमान के कारण आतंक मचाता है, धमकियाँ देता है या निर्दोष पर भी दोष लगा कर उसे दण्डित करता है। वह कमजोर पर अत्याचार करता है, दबाव डाल कर पैसा ऐंठता है, हाकिम समझ कर हुकूमत चलाता है या हाँक कर पशुओं की तरह चलाता है। उसे यह मालूम नहीं पड़ता कि वह दूसरों को सताकर, उनके आँसू या आहों को निकाल कर अपने लिये आफत ला रहा है। उस बुद्धि-भ्रष्ट व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है। वह पुलिस अधिकारी होकर सुरक्षा या राहत देने की बजाय निरपराध को डण्डा मारता और फटकारता है या जेल में डालता है। लाईसेंस देखने के बहाने चालान करने की धमकी देकर रौब से पैसा मांगता है। यदि वह प्रशासन-अधिकारी है तो तरक्की रोक लेता है, गलत रिपोर्ट देकर हानि पहुँचाता है और काम पर काम लेते जाने के बाद भी सुस्त बताता है। यदि वह राजनीतिक नेता है तो अपनी शक्ति का दुरूपयोग करते हुए या तो झाँसा देता है या अपना अनुचर बनाता तथा वोट और नोट मांगता है। इस प्रकार, हरेक शक्तिशाली तथा अधिकार-युक्त व्यक्ति दबदबा दिखाकर परेशान करता है। यहाँ तक कि आश्रम का अधिकारी अथवा स्वामी भी अपनी सत्ता, सिद्धि स्थानों या साधनों के बलबूते पर अनेकानेक के दिल दुखाता है और अदलाबदली करके, खलबली मचा कर या चालाकी चल कर बहुत जनों को दु:खी या परेशान करता है और डण्डा मार कर पशुओं की तरह चलाता अथवा काम लेता है। यही तो 'धर्मग्लानि' है। यदि धर्म के ठेकेदार भी निर्दयी बन जायें और कमजोरों तथा अधीनस्थ लोगों की रूह को राहत देने की बजाय उन्हें आहत करें तो गोया वे विपरीत-बुद्धि, ईश्वर-विमुख हैं व दूसरों को वंचित कर अपना भरण-पोषण करने वाले हैं। वे भगवान का नाम लेते हैं परन्तु भगवान से नहीं डरते। दूसरों के दिल से जो 'हाय, हाय!' निकलती है, उस हाय रूपी अन्दर की अग्नि में भस्मीभूत होने का निमन्त्रण स्वीकार करते हैं।

अत: हे मनुष्य, तू कुछ डर! दया का पात्र बनेगा। नेकी कर दरिया में डाल। दया से ही धर्म के वृक्ष का मूल उगेगा। तू धक्का न दे, दुत्कार न दे, दया किया कर, प्यार तू दे, क्षमाशील बन, भगवान को देख, मत सता, न दुखा, स्वयं को देख कुछ रहम कर, वहम न कर लोग आह भरेंगे, तू ऐसा अहं न कर।

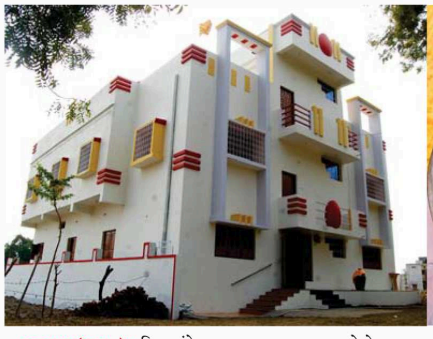

राजपुर (म.प्र.)। शिव संदेश भवन का उद्घाटन करने के पश्चात ब्र.कु.सूर्य को अभिनंदन पत्र भेंट करते हुए नगर पंचायत अध्यक्ष उषा चौधरी। साथ हैं ब्र.कु.प्रमिला।

शांतिवन। दादी जानकी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए वामा काम्युनिकेशन की डायरेक्टर वंदना, सौरिन पटेल, ब्र.कु.रमेश शाह तथा ब्र.कु.अम्बिका।

शांतिवन। ब्रह्माकुमारी संस्था एवं आरकेडीएफ युनिवर्सिटी भोपाल के मध्य एमओयू साइनिंग सेरेमनी में दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी, वाइस चांसलर आशीष डोंगरे, ब्र.कु.मृत्युंजय तथा अन्य।

वाराणसी। 17 वें करमापा से मुलाकात करते हुए ब्र.कु.सुरेन्द्र दीदी, ब्र.कु.दुर्गा तथा ब्र.कु.दीपेन्द्र।

तलेगांव-दभाडे। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुए पूर्व विधायक कृष्णाराव भेगडे, ब्र.कु.गोदावरी तथा अन्य।

पुणे। महाराष्ट्र सरकार के साथ मिलकर नारी सुरक्षा प्रोजेक्ट चलाने के लिए प्रोजेक्ट के डायरेक्टर टेकाले जी व आनंद जी से चर्चा करने के पश्चात उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राजश्री।

कोलकता। प्रसिद्ध गायक कुमार शानू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सम्पा।